जय माँ शारदे

स्नातक हिन्दी-प्रतिष्ठा प्रथमवर्ष

हिन्दी साहित्य का इतिहास प्रथम पत्र

प्रगतिवाद की प्रवृत्तियाँ

(1) छायावाद के गर्भ से सन् '30 के आस-पास नवीन सामाजिक चेतना से युक्त जिस साहित्यधारा का जन्म हुआ, उसे सन् '36 में प्रगतिशील साहित्य अथवा प्रगतिवाद की संज्ञा दी गयी।

डॉ० कामेश्वर शर्मा के शब्दों में — "राजनीति के क्षेत्र का मार्क्सवाद, सामाजिक क्षेत्र का साम्यवाद-समाजवाद और दर्शन के क्षेत्र का द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद ही हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में प्रगतिवाद के रूप में मान्य हुआ।" प्रगतिवाद सामाजिक यथार्थवाद के नाम पर चलाया गया वह साहित्यिक आन्दोलन है, जिसमें जीवन और यथार्थ का वस्तु-सत्य उत्तर छायावाद-काल में प्रश्रय पा सका और जिसने सर्वप्रथम हमारी समस्त साहित्यिक चेतना को यथार्थवाद की ओर अग्रसर होने की प्रेरणा दी।

प्रगतिवादी काव्य की प्रमुख प्रवृत्तियों का विवेचन अभीष्ट है :— ~~निम्नांकित हैं :—~~

1. रूढ़ि विरोध :—

आने के साथ ही प्रगतिवाद ने अपना पहला आक्रमण ईश्वर और धर्म पर किया। प्रगतिवादी साहित्यकार ईश्वर को सृष्टि का कर्ता न मानकर जागतिक द्वन्द्व को सृष्टि के विकास का समवाय-कारण स्वीकार करता है। उनके लिए धर्म और ईश्वर अफीम के नशे के समान है। ईश्वर के संबंध में पंत कहते हैं — "ईश्वर को मरने दो।" और अंचल लिखते हैं —

"आज भी जन-जन जिसे करबद्ध होकर याद करते,
नाम ले जिसका गुनाहों के लिए फरियाद करते,
किन्तु मैं उसका घृणा की धूल से सत्कार करता।"

प्रगतिवादी कवि को अन्धविश्वासों, मिथ्या-परम्पराओं और रूढ़ियों पर प्रखर प्रहार करके मानव को मानव रूप में देखना अभीष्ट है :—

"किसी को आर्य, अनार्य,
किसी को यवन
किसी को हूण-यहूदी-द्रविड़
किसी को शीश
किसी को चरण
मनुज को मनुज न कहना आह!"

2. शोषितों का करुण गान :—

शोषण, मानव-जाति के लिए घोर अभिशाप है और इसका निवारण साम्यवादी व्यवस्था का लक्ष्य है। निर्मम शोषण-चक्की में पिसने वाले शोषित वर्ग — मजदूरों, किसानों एवं

सर्वहाराओं की दशा का प्रगतिवादी कलाकार ने सहानुभूति पूर्ण करुणिक चित्रण किया है। दलितों की दीन-दशा पर आँसू बहाते हुए रामेश्वर शुक्ल 'अंचल' लिखते हैं कहते

"यह नस्ल जिसे मानव, कीड़ों से आज गयी-बीती।
बुझ जाती तो आश्चर्य न था, हैरत है पर कैसे जीती॥"

भारत के दरिद्र नारायण मजदूर का वर्णन द्रष्टव्य है:-

"ओ मजदूर! ओ मजदूर!!
तू सब चीजों का कर्ता, तू ही सब चीजों से दूर।"

2. शोषकों के प्रति घृणा और रोष:-

प्रगतिवादियों के मान्यतानुसार इस संसार में केवल दो ही जातियाँ हैं — शोषक और शोषित तथा इसका मूल कारण है पूँजीवादी व्यवस्था। प्रगतिवादी इस व्यवस्था को कुचल देना चाहता है। 'अंचल' जोर देकर गाते हैं — "हो यह समाज चिथड़े-चिथड़े, शोषण पर जिसकी नींव पड़ी।"

दिनकर जी अपनी पुस्तक 'हुंकार' की 'विपथगा' शीर्षक कविता में सामाजिक जीवन के वैषम्य को देखकर आक्रोशमयी प्रलयंकारी वाणी में वज्र-निर्घोष करते हुए कहते हैं —

"श्वानों को मिलता दूध-वस्त्र, भूखे बालक अकुलाते हैं।
माँ की हड्डी से चिपक ठिठुर, जाड़ों की रात बिताते हैं॥
युवती का लज्जा-वसन बेच, जब ब्याज चुकाये जाते हैं।
मालिक जब तेल फुलेलों पर पानी सा द्रव्य बहाते हैं॥
पापी महलों का अहंकार, देता मुझको तब आमंत्रण।
झन-झन-झन-झन झन नन-झनन॥"

4. मार्क्स तथा रूस का गुणगान:-

प्रगतिवादियों द्वारा भारत के लिए अनुचित सिद्ध होने के बावजूद रूस की मान्यताएँ गायी जाने लगी। रूढ़ि का विरोध करने के चक्कर में उन्होंने महारूढ़ि अपना ली। एक ईश्वर का विरोध करके अनेक प्रगतिवादियों ने मार्क्स को ईश्वर के स्थान पर प्रतिष्ठित कर दिया। पन्त ने लिखा —

"धन्य मार्क्स चिर तमाच्छन्न पृथ्वी के उदय शिखर पर,
तुम त्रिनेत्र के ज्ञान-पशु से प्रकट हुए प्रलयंकर।"

तथा नरेन्द्र शर्मा ने लगभग मजहबी उन्माद में नारा दिया —

"लाल रूस का दुश्मन साथी! दुश्मन सब इन्सानों का,
दुश्मन है सब मजदूरों का, दुश्मन सभी किसानों का।"

५. सामाजिक जीवन का यथार्थ-चित्रण :-

डॉ० कामेश्वर शर्मा के शब्दों में - "किसी भी प्रगतिशील साहित्य की पहली और सर्व-प्रमुख शर्त यथार्थ-चित्रण की ही होती है।" स्वभावत:, प्रगतिवादी कवि भी इस ओर उन्मुख हुए। पंत ने 'दो लड़के', निराला ने 'भिक्षुक', 'विधवा', 'वह तोड़ती पत्थर', 'कुकुरमुत्ता', नागार्जुन ने 'प्रेत का बयान' आदि अनेक समर्थ, शक्तिपूर्ण और प्रभावकर कविताएँ लिखी जिसमें दलितवर्ग की वेदना चरम पर पहुँची। परन्तु बाद में यथार्थ-चित्रण के नाम पर घृणित अश्लीलता का बोलबाला हो गया। अंचल की 'सावन की मद भरी रात', नरेन्द्र शर्मा की 'आज न सोने दूँगी बालम' आदि कविताएँ इसका परिचायक है।

६. सामयिक समस्याओं का चित्रण :-

प्रगतिवादी कवि देश-विदेश की सामयिक समस्याओं के प्रति अत्यन्त सजग रहा है। 'बंगाल के अकाल' पर निराला द्वारा किया गया हृदय-विदारक चित्रण द्रष्टव्य है -

"बाप बेटा बेचता है, भूख से बेहाल होकर।
धर्म - धीरज प्राण खोकर, हो रही अनरीति बर्बर।
राष्ट्र सारा देखता है।"

७. मानवतावाद :- प्रगतिवादियों का एक समुदाय समस्त मानवता का उद्धार चाहता है। उसे संसार के सभी पीड़ित लोगों से प्यार एवं सहानुभूति है। नरेन्द्र शर्मा लिखते हैं-

जाने कब तक घाव भरेंगे इस घायल मानवता के ?
जाने कब तक सच्चे होंगे, सपने सबकी समता के ?"

८. नारी-चित्रण :- पंत, नरेन्द्र शर्मा इत्यादि कवियों ने पहले नारी के स्वतंत्र व्यक्तित्व का पक्ष लिया था। परन्तु बाद में यथार्थता की आड़ में गोप्य वस्तुओं का चित्रण अगोप्य की तरह होने लगा, जिससे अश्लीलता की वीभत्सता आ गयी।

९. कला संबंधी मान्यता :- प्रगतिवादी कवि को क्रांति की भावना के प्रचार के लिए कलात्मकता का बलिदान देना पड़ा। प्रगतिवादी काव्य में सरलता और सहज बोधगम्यता है। कलात्मक मान्यताएँ जैसे परिवर्तित हो गयी। पंत जी लिखते हैं -

तुम वहन कर सको, जन-मन में मेरे विचार,
वाणी मेरी चाहिए तुम्हें क्या अलंकार।"

इन्हीं कतिपय प्रवृत्तियों, विशेषताओं से युक्त प्रगतिवाद ने साहित्य को गगनगामी की अपेक्षा धरित्री-गामी बनाया परन्तु बाद में स्वयं पंकिल सरोवर में डूब गया। फिर भी उसका ऐतिहासिक महत्त्व है।

प्रस्तुतकर्ता - डॉ० बुद्धदेव प्रसाद सिंह
सहायक प्राचार्य (Asst. Prof.)
हिन्दी विभाग
डी० बी० कॉलेज, जयनगर
मधुबनी (बिहार)

दिनांक - 16-04-2020.